सन्देश संख्या १२

कुछ सारगर्भित शब्दावलियाँ

(क्रियायोग) वंश–परम्परा के माध्यम से व्यक्त निम्नांकित सारगर्भित सूक्तियों पर ध्यान दें जो कि अभिव्यक्त शब्दों की अपेक्षा अत्यधिक सम्प्रेषणीय हैं, जैसे–

१. विभेदकारी चित्तवृत्ति (Separative Consciousness)
२. एकात्म बोध (Unitive awareness)
३. प्रत्यक्ष बोध (Perception)
४. वैचारिकीकरण (Conceptualization)
५. अस्तित्व (Existence)
६. अनुभव (Experience)
७. बहिर्भाव (Ideas)
८. अन्तर्दृष्टि (Insight)
९. ज्ञान (Knowledge)
१०. प्रज्ञा (Wisdom)
११. मन (Mind)
१२. निर्मन (No-mind)
१३. अहम्भाव (I-ness)
१४. त्वंभाव (You-ness)
१५. मनोविकृति (Mindlessness)
१६. विचार में असततता (Discontinuity in thought)
१७. विकल्प रहित सचेतना (Choicelessness)
१८. अतिथिभाव (Guest-like Attitude)
१९. साक्षीभाव (Witness-like Attitude)
२०. समाप्ति भाव, न कि विपरीत भाव का संवर्द्धन
(Attitude of ending and not cultivating opposites)
२१. अनुभूति न कि विचारों का मात्र उधारीकरण (Learning and not just borrowing beliefs)
२२. बुद्धि (Intellect)
२३. चित्शक्ति (Intelligence)
२४. अन्तर्मुखी प्रक्रिया (Centripetal Process)
२५. बहिर्मुखी प्रक्रिया (Centrifugal Process)
२६. ध्याता के बिना ध्यान (Meditation without meditator)
२७. बन्धनमुक्ति (Deconditioning)
२८. एकाग्रता (Concentration)
२९. समग्र जागरूकता के साथ संकेन्द्रण (Focussing yet being aware of the whole)
३०. एकाकित्व (Aloneness)
३१. एकान्तता (Loneliness)
३२. यथार्थ सत्य (Etic truth)
३३. मान्य सत्य (Emic truth)

हम दीक्षा पूर्व गोष्ठियों, दीक्षा समारोहों एवं पुनरीक्षा बैठकों में विविध प्रसंगों एवं विभिन्न स्थितियों में इन सारगर्भित शब्दावलियों को सुनते हैं किन्तु शीघ्र भूल जाते हैं। हम इन्हें विस्मृत न होने दें। इन बीज रूप सूक्तियों के गूढ़ भाव को जीवन के प्रत्येक क्रिया–कलाप एवं पारस्परिक सम्बन्धों में इस प्रकार उतारें कि किसी भी प्रकार से इससे साथ न छूटे। रत्न की भाँति इन्हें सँजोयें। यह सँजोना इस मायने में विशिष्ट है कि इसमें न तो किसी प्रकार का सम्मोहन है और न ही अवरोधन। यह सुविधाजनक अवधारणाओं/विचारों की शरणस्थली नहीं है। यह किसी औसत मस्तिष्क की निर्जीव उपज भी नहीं है। यह एक अति जीवन्त प्रक्रिया है। इन सूक्तियों को आत्मसात् करें तथा क्रियाभ्यास द्वारा उस परम पवित्र अस्तित्व का स्पर्श करें।